प्रातःक्लास ओमशांति (रुहानी समाचार) 12.10.67

बच्चों को बाप समझाते हैं अपन को आत्मा समझकर बैठो और बाप को याद करो। यह तो रोज बाबा का कहना है। छोटे2 बच्चे को भी सिखलाना चाहिए। गुडमार्निंग,गुडनाइट तो कहते हैं ना। साथ में बच्चों को कहना चाहिए अपन को आत्मा समझो, शिवबाबा को याद करो। कोई भी कह सकते हैं। जैसे कोई अर्जी की जाती है ना। बच्चों को भी समझाओ। अपन को भी समझाओ। यह बहुत कल्याणकारी अक्षर है, जो ब्रह्माकुमारियां ही कह सकती हैं। भाउ या दादा या बहनजी। कोई भी मिले बोलो शिवबाबा कहते हैं अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो तो तुम्हारा पाप भस्म हो जावेगा। तुम पुण्यात्मा स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। बच्चों को भी यह समझाय दो। कोई भी मित्र–सम्बंधी आदि आवे उनको हैडशिप भी करे और फिर यह भी सुनावे कि यह है सबसे बड़ा गुण बाप का परिचय देना। गीता जो पढ़े हुए होंगे उनको भी बहुत अच्छा लगेगा। समझ जावेंगे भगवान शिव को कहते हैं। तो ऐसी2 बातें अपन पास नोट कर दो। जो भी मिले मैं रिक्वेस्ट करता हूं अपन को आत्मा समझो और शिवबाबा को याद करो। वह उंच ते उंच पतित–पावन है। शॉर्ट में ऐसे बनाओ जिससे अर्थ पुरान निकल जाये। बहुत सिम्पल है। तुम यह याद कराय बहुतों का कल्याण करेंगे। (स्कूलों) में भी भाषण पर तुमको बुलाया जाता है ;क्योंकि यह सब समझते हैं बच्चों की कैरेक्टर्स सुधारनी है। टीचर्स आदि समझ जावेंगे। इस शिक्षा से बरोबर कैरेक्टर्स सुधरती जावेगी। पापात्माओं की कैरेक्टर ही पाप की है। इस कैरेक्टर (से) पवित्र देवता बन जावेंगे। शिवबाबा को याद करो तो पाप भस्म हो जाये। विकार में न जाओ। जब भी भाषण आदि पर जाते हो तो यह है मुख्य शिवबाबा का ईश्वरीय मंत्र। बाकी और सभी हैं आसुरी मंत्र। ईश्वरीय मंत्र एक बार ही मिलता है। फिर आधा कल्प यह मंत्र मिलना ही बंद हो जाता है। यह अच्छी रीति समझाना है। दिन–प्रतिदिन नई2 प्वाइंट्स भी निकालते रहेंगे। आज भी बाबा का खयाल चल रहा था यह राधा बच्ची बाबा पास आई। अच्छी पढ़ी–लिखी है। तो बाबा समझाय रहे थे अपनी है रुहानी न्यूज। न्यूज अर्थात् समाचार। अब रुहानी समाचार नाम वाले तो कोई अखबार हैं नहीं। एक मोहिनी बच्ची देहली में भी पढ़ी–लिखी है। उनको भी बाबा ने कहा था एक अखबार निकालो तो अच्छा है ;परंतु इतना ध्यान में न आया। अब देखने में आता है अपनी गवर्मेंट का अखबार बहुत जरूरी है। (जैसे) आगे लगा .....गॉडली यूनिवर्सिटी तो बिगरे(बिगड़े) थे। कितनी लिखा–पढ़ी चली। एक ऑफिसर ने बंद कर दिया। अच्छा ऑफिसर बदली हुआ। दूसरे ऑफिसर के बुद्धि में बैठ जाये तो कुछ बोलेंगे नहीं। हर एक का खयाल अपना2 होता है। तो अपनी यह बड़ी गवर्मेंट है। अपना कोट ऑफ आर्म्स भी नामी–ग्रामी है त्रिमूर्ति शिव का। बाबा ने समझाया था यह .... भी सतयुग का नहीं। यह संगमयुग का कोर्ट ऑफ आर्म्स है। कौरव राज्य भी है। पांडव भी है। ताज तो दोनों को नहीं है। दिखाते हैं राजाई पर दांव लगाया। यह सब है दंत कथायें। शास्त्रवादी बड़ी आडम्बर की बातें बैठ सुनाते हैं। अब राजा–रानी तो कोई है नहीं। प्रजा को पंचायती राज्य कहा जाता है। पांडवों को भी राज्य नहीं है। कांग्रेस गवर्मेंट है तो पांडव भी गवर्मेंट ठहरी। तो अपने रुहानी न्यूज में अच्छी रीति डाल सकते हो। 5/10हजार कॉपियां निकालें। बड़ों2 को फ्री भेज सकते हो। हर्जा थोड़े ही है ; परंतु बच्चों का अजुन इतना दिमाग खुला नहीं है। हम पांडव गवर्मेंट है। तुम बताय सकते हो यह रुहानी गवर्मेंट है। भगवान तो है ही सुप्रीम रूह। किसी मनुष्य को वा देवताओं को भगवान नहीं कह सकते। ऐसी2 बातें तुम क्लीयर कर लिख सकती हो। इसमें बुद्धि बड़ी अच्छी चाहिए। पढ़ी–लिखी चाहिए। बाबा के पास तो बहुत है। यह ओमप्रकाश (जबलपुर) बड़ी अच्छी सर्विस करते हैं। दिन–प्रतिदिन बच्चे होशियार होते जाते हैं। जैसे पटना में जनक है, राज है, पुष्पाल है। बच्चियों ने सर्विस को अच्छा उठाया है। पुरानी जो बच्चियां थीं उनमें इतना दम न था सर्विस को उठाने का। कोई चढ़ते हैं तो फिर कोई उतरते भी हैं ना। सब बच्चों को ग्रहाचारी आती है। यह है सच्ची2 कमाई। बच्चे खुद लिखते हैं बाबा माया

के तूफान बहुत आते हैं। खुशी कम हो गई है ;क्योंकि माया से हार खाते हैं ना। ग्रहाचारी बहुत करके बैठे हैं। राहू की दशा, मंगल की दशा, शनिचर की दशा होती है ना। सबसे कड़ी होती है राहू की दशा। विकारी में जाते हैं तो फिर राहू की दशा बैठ जाती है। लिखते हैं बाबा हमारी खुशी गायब हो गई। धंधे में इतना टोटा पड़ गया। अब धंधे में फायदा और नुकसान होता है ना। उसमें बाबा को कोई तकलीफ नहीं। इसमें आशीर्वाद की बात नहीं रहती। यह तो पढ़ाई है। कृपा नहीं हो सकती। ड्रामा है ना। ड्रामा अनुसार पार्ट बजाया जाता है। बाप कहते हैं मैं भी पार्ट बजाने आता हूं। मुझे बुलाते ही हैं हे पतित–पावन आओ। आकर हमको पावन बनाओ। इसके लिए बाप राजयोग सिखाते हैं। इसमें गुण भी अच्छी चाहिए। तुम बच्चों ने अच्छी रीति समझा है। कैरेक्टरलेस जो हैं वह कैरेक्टर वाले राजाओं को नमन करते हैं। बाबा ने कहा था यह भी चित्र बनाओ। लिख दो यह पतित, यह पावन। इस समय है ही पतित दुनियां। पावन होते ही हैं सतयुग में। साधु–संत आदि सब पतित की लाइन में आ जाते हैं। तब तो बाप कहते हैं मैं साधुओं का भी उद्धार करने आता हूं। यह है ही पतित दुनियां। यहां भ्रष्टाचार से ही पैदा होते हैं। इसको कहा ही जाता है विषस वर्ल्ड। वह है वायसलेस वर्ल्ड। वह नई, यह पुरानी। पुरानी दुनियां में कोई वायसलेस हो नहीं सकता। संगम पर ही बाप को आना पड़ता है। तो बच्चों को ऐसी2 खयाल करना चाहिए अपनी अखबार कैसे निकालें। अपनी कमेटी भी बहुत मीठी होनी चाहिए। बाबा जानते हैं कई बच्चियां बहुत अच्छी सर्विस कर रही हैं। मतभेद बहुत खराब है। मतभेद में राजाओं ने भी राजाई गंवाय दी। वहां तो शेर–बकरी भी प्यार से चलते हैं। यहां तो कितना मतभेद हो जाता है। पटना निवासी खुद जानते हैं आगे बहनों की आपस में नहीं बनती थी। बातचीत करने की भी रॉयल्टी नहीं रहती। अनपढ़ी है ना। बड़े आदमी से भी तुम–तुम कह बात करती हैं। पति को भी तुम कह देंगी। बातचीत करने की बड़ी फजीयलत चाहिए। कैरेक्टर्स अच्छी चाहिए। तुम लिख भी सकते हो सतयुग से त्रेता तक यह कैरेक्टर्स रहते हैं। फिर द्वापर–कलियुग में यथा राजा–रानी तथा प्रजा सब कैरेक्टरलेस हो जाते हैं। तुम बच्चे समझाय सकते हो। बाबा ने ऐसे2 कहा है तुम्हारा सेंटर गलियों के अंदर न होना चाहिए ;क्योंकि यह तुम्हारी बहुत बड़ी बिजनेस की दुकान है। भल करके माताओं को वहां आना सहज होता है ;परंतु आजकल तो मातायें भी खड़ी हो गई हैं। जहां–तहां खुले रीत जाती हैं। तुम्हारी है रुहानी दुकान जिसमें ज्ञान रत्नों का सौदा मिलता है। जिनका कनेक्शन होगा आस्ते2 उन्हों की बुद्धि का ताला खुलता जावेगा। बाप से वर्सा लेने पुरुषार्थ करने लग पड़ेंगे। जो अच्छी रीति सर्विस करते हैं वह कितने मीठे लगते हैं। न पढ़ने वाले उन्हों के आगे जाय झाड़ू लगावेंगे। सर्विसेबुल ही दिल पर चढ़े रहते हैं। तुम जानते हो यह हमारी राजधानी स्थापन हो रही है। कहते हैं बाबा हम तो लक्ष्मी–नारायण बनेंगे ;परंतु लायक भी बनना है। इस पर नारद का भी मिसाल देते हैं। नारद एक तो नहीं। ऐसे तो बहुत हैं ना। इतने ढेर भक्त हैं। सब नर से नारायण बनेंगे क्या?जब तक नालेज नहीं धारण करते हैं तब तक तमोप्रधान पत्थरबुद्धि ही हैं। समझते नहीं हैं भगवान ने ही यह राजयोग सिखाया ...। कृष्ण को तो भगवान नहीं कहते। ब्रह्मा, विष्णु,शंकर को भी भगवान नहीं कहते तो मनुष्य शरीरधारी को भगवान कैसे कह सकते। कृष्ण तो प्रिंस था। फिर स्वयंवर बाद ल.ना. बनकर राज्य करके गये हैं। स्वयंवर बाद गद्दी पर बैठने से राजा कहा जाता है। प्रिंस को राजा नहीं कहेंगे। तो बाप युक्तियां भी बतलाते रहते हैं। पहले2 कोई से भी मिलो तो उनके कल्याण करने की बात दो। हम अर्जी करते हैं एक तो आप अपन को आत्मा समझो और शिवबाबा ने कहा कि मुझे याद करो। मैं सर्व का पतित–पावन हूं। अथार्टी हूं। मैं सभी वेदों–शास्त्रों को जानता हूं। यह सब सामग्री है भक्तिमार्ग की। इनसे कब कोई का कल्याण नहीं हो सकता। न मेरे से मिल सकते हैं। कल्याणकारी बाप ही

आय कल्याणकारी बनाते हैं। जैसे बाप कल्याणकारी है वैसे तुम बच्चे भी कल्याण करते रहो। पहली2 बात ही यह। भाकी आदि पहनने पहले बोलो अपन को आत्मा समझ और बाप को याद करो। बाप कहते हैं पतित–पावन मैं हूं। मुझे याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। जितना याद में रहेंगे उतना उंच पद पावेंगे। यह तो पक्का करो। कहेंगे यहां तो बहुत अच्छा सिखाया जाता है। सभी कहते हैं भारत का कैरेक्टर लो हो गया है ;परंतु हाई कब था?कैसे हुआ?यह किसको पता नहीं। बाबा ने समझाया ल.ना.चित्र भी हो। यह है राजाओं का महाराजा। बाप कहते हैं हम तुमको राजाओं का महाराजा बनाता हूं। श्री नारायण को महाराजा, राम को राजा कहेंगे। भारत में यह चला आता है। महाराजायें भी होते हैं तो राजायें भी होते हैं। ब्रिटिश गवर्मेंट जब थी तो बड़े2 जमींदार जो होते थे उन्हों को राजा–महाराजा का टाइटिल देते थे। वह लोग पैसा लाख/डेढ़ लाख देते थे और वह टाइटिल दे देते थे। जमींदारी के हिसाब से। आगे तो हीरे–जवाहर देते थे तो झट रिकमिंड कर लेते थे। अब तुम माताओं को सर्विस में अच्छी रीति (ध्यान) देना है। गोपों को भी माताओं को आगे बढ़ाना है। वह शोभता है। गवर्मेंट भी आजकल फीमेल्स को प्रिफरेंस देते हैं। बाप भी आय माताओं को उठाते हैं ; क्योंकि यह ही दासी होकर रही हैं। स्त्री को कहा जाता है पति तुम्हारा ईश्वर ,गुरू है। यह उल्छी रसम कहां से निकली है?शास्त्रों से ,भक्तिमार्ग के चित्रों से। आजकल के साधु–संत भी स्त्रियों से बैठ पांव दबवाते हैं। इस बाबा ने 12 गुरू किया है। बहुतों की पांव दबाई है। झूठा खाते रहते हैं तो भी पांव दबाते रहेंगे। यह तो भक्त .....। तब बाबा ने कहा इन गुरुओं आदि सबको छोड़ो। यह सब भक्तिमार्ग के हैं। आधा कल्प है भक्ति। आधा कल्प फिर ज्ञान से वर्सा मिल जाता है। वह लोग गीता पढ़ते हैं। कितनी आमदनी होती है। वह सब शास्त्र सुनते–सुनाते हैं। एम ऑब्जेक्ट कुछ है नहीं सिवाय गीता के। गीता में है मैं तुमको राजाओं का राजा माना मनुष्य से देवता बनाता हूं। देवी–देवताओं का राज्य था ना। तुम बच्चों को तो बहुत खड़ा होना चाहिए। आपस में मिलकर सर्विस को उठाओ। सुनते तो सब बच्चे हैं। फिर तुम अखबार में भी यह सब डाल सकते हो। तुम हर बात में लिखते रहेंगे 5000वर्ष पहले यह हुआ था। फलाना मर गया 5000वर्ष पहले मिसल। नथिंग न्यू। अखबार में एक आर्टिकल सदैव निकलती है कि यह 100वर्ष पहले भी हुआ था। तुम लिखेंगे 5000वर्ष पहले हुआ था। कोई भी काम निकाला जाता है उसमें पहले जरूर खर्चा होता है। व्यापार किया जाता है। पहले थोड़ा नफा होता है। पीछे बहुत। ग्राहक बहुत आते–जाते हैं। बढ़ाते जाते हैं। इसमें भी खर्चा होगा। विश्व की बादशाही स्थापन हो रही है। खर्चा तो होगा ;परंतु युक्ति से चलाना है। बच्चे सब कुछ अपने लिए ही करते हैं। इसने जो कुछ किया सो यह मालिक बन जाते हैं। लेन–देन होती है ना। इन बातों को दुनियां नहीं जानती। कहते हैं बाबा हमारा तन–मन–धन कलियुगी सम्बंध, धन–दौलत सब ले लो। भूख तो कोई मर न सके। और ही नम्रता भाव में आ जाते हैं। बाबा, मामा सब कुछ काम करते थे ना। समझते हैं जैसे कर्म हम करेंगे हमको देख और सब करेंगे। बच्चे देखकर सीखेंगे। तो बाबा, मामा भी सब कुछ करते थे। तब बाबा समझाते हैं ब्राह्मणियां भी ऐसा काम न करे जो और देख सीख जाये। ब्राह्मणी खटिया पर बैठ चाय आदि लेगी तो और भी सीख जावेंगे। यहां सुख ले लिया तो वहां कम हो जावेगा। यहां हुकुम रानी नहीं बनना है। बाबा कहते हैं हम ओबिडियेंट सर्वेंट हैं। यह तो फिर भी बुजुर्ग हैं ;परंतु काम में हाथ डाल देते हैं। सब आ जावेंगे। बड़ों को खबरदार रहना है। जैसे हम काम करेंगे तो और ही सीख जावेंगे। यहां तो तुमको बनवाह में रहना है। अच्छा कपड़े,जेवर आदि सब उतार देते हैं। यहां तो रात–दिन सर्विस में लग जाना है। सर्विस तुम्हारी बहुत बड़ी है। सारे विश्व को शिववालय बनाना है। कितनी बड़ी सर्विस है। बाबा अकेला थोड़े ही विश्व को शिवालय बनावेगा। जो निर्बंधन है उनको कोशिश कर बंधन में न

(अधूरी मुरली है)